बचपनी

है एक अच्छी याद
मन में जो इंसानो के
जो दिखते है इंद्रधनुष जैसे
और नही होते गायब।

बचपनी में ना है चिंता
और ना है दुख
होता है हमेशा दिल
खेलने की जल्दी में।

उनके मन का अच्छाथी
रहते जैसे इंद्रधनुष हो
जो सात रंग से चमकते
और फैलाते है खुशी हर तरफ।

आते हैं बच्चें दुनिया में
आँसू की माला माँ को पहनाकर
फिर माँ पहनाते बच्चों को
अच्छाथी और खुशी की माला।

चाहते हैं बचपन में
जल्दी बड़े हो जाने को
जब हो जाएँगी बड़ा तो
मन धड़क ने वापस आने को।

वह होती है अच्छी याद
जिसपे चाहते हम वापस जाने
किन्तु क्या कर सक्ते हम
वापस कभी न जा पाओगे।

बचपन का जो मीठे-मीठे
यादें झलकथे हैं मन में
जैसे एक अच्छी बूंद जो
धूम ते हैं शांती कीलार।

बदल दे इंसानों के जो
जलन से खून पीने का मन
वापस जाथिरा बचपनी में
और बना दे समाज खुबसूरत।

बचपनी का इंद्रधनुष
गायब नहीं होते मन से
जब जाएँगे भगवान के पास
तो भी ले जाते अपनी साथ।